बुध प्रदोष व्रत कथा PDF

यह बहुत पुरानी बात है कि एक आदमी ने नई शादी की थी। उस आदमी के ससुर, ससुर, ननद ने समझाया कि बुधवार के दिन पत्नी को ले जाना शुभ नहीं होता। लेकिन वह आदमी नहीं माना, मजबूर होकर सास–ससुर ने भारी मन से अपने दामाद और बेटी को विदा किया। पति–पत्नी बैलगाड़ी से जा रहे थे।

किसी नगर से बाहर निकलते ही पत्नी को प्यास लगी। पति अपनी पत्नी के लिए घड़ा लेकर पानी लेने गया, जब पानी लेकर लौटा तो देखा कि उसकी पत्नी किसी अजनबी के लाए हुए मटके से पानी पीकर हंस–हंस कर बातें कर रही है। वह पराया आदमी उसी की शक्ल का था। यह देख वह व्यक्ति आगबबूला हो गया और अजनबी से मारपीट करने लगा। धीरे–धीरे कॉफी की भीड़ वहां जमा हो गई और सिपाही भी आ गए।

सिपाही ने महिला से सच–सच बताने को कहा कि इन दोनों में तुम्हारा पति कौन है। लेकिन महिला चुप रही, क्योंकि दोनों पुरुष हमशक्ल थे। इतने में वह अपनी पत्नी को लुटता देख मन ही मन भगवान शंकर की स्तुति करने लगा।

हे भगवान मुझे और मेरी पत्नी को इस मुसीबत से बचा लो। बुधवार को अपनी पत्नी को विदा कर मैंने जो अपराध किया है, उसके लिए मुझे क्षमा करें। मैं भविष्य में ऐसी गलती कभी नहीं करूंगा। भगवान शिव उनकी प्रार्थना से मोहित हो गए और दूसरा व्यक्ति उसी समय मंत्रमुग्ध हो गया। इसके बाद वह अपनी पत्नी को लेकर सकुशल अपने नगर पहुंच गया। इसके बाद दोनों पति–पत्नी बुधवार को नियमित रूप से प्रदोष व्रत रखेंगे।

pdfinbox.com